International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 08-11
www.educationjournal.info
Received: 03-10-2022
Accepted: 16-11-2022

रीता सिंह
शोध छात्रा-शिक्षाशास्त्र
जे०जे०टी०यु, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
रीता सिंह
शोध छात्रा-शिक्षाशास्त्र
जे०जे०टी०यु, राजस्थान, भारत

बी०एड० पाठ्यक्रम के छात्राध्यापकों को वर्त्तमान के सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति से उत्पन्न व्यवहार पर न्यासयोग ऊर्जा उपचार का प्रभाव

रीता सिंह

प्रस्तावना

रेयन्स (1970) के अनुसार, "शिक्षक व्यवहार से तात्पर्य व्यक्ति के उन सभी क्रियाओं तथा व्यवहार से होता है जो किसी शिक्षक के करने योग्य मानी जाती है। विशेष रुप से वे क्रियाएँ जो दूसरों के सीखने में निर्देश एवं मार्गदर्शन से संबंधित है।"

बी०एड० के छात्राध्यापकों में इसी व्यवहार की स्थापना का प्रशिक्षण दिया जाता है। शिक्षण व्यवहार का मापन शिक्षक और छात्र के बीच अन्त:क्रिया के द्वारा होता है। कक्षा में होने वाली घटनाओ और शिक्षकों के व्यवहार का निरीक्षण कर यह मापन संभव है।

रेयन्स ने अन्तःक्रिया एवं पारस्परिक निर्भरता के आधार पर शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार के दो प्रकार बताए हैं।

1. प्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार
2. अप्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार

प्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार

इस तरह की व्यवहार में शिक्षक अपना विशेष प्रभाव बनाने का प्रयास करते हैं और विद्यार्थियों पर अपनी बात गानूने का दबाव बनाते हैं।

व्योगन (1956) के अनुसार, प्रत्यक्ष व्यवहार वाले शिक्षक असागाणिक, अधीर, रचकेन्द्रित, उग्र, दम्भी, विद्वेषी मनोवृत्ति के होते हैं। वे छात्रों के प्रति सहानुभूति पूर्वक व्यवहार नहीं अपनाते हैं।"

कुरैशी तथा दुसैन ने ऐसे शिक्षकों के बारे में कहा है कि ऐसे शिक्षकों में निम्न बातें होती हैं।

1. सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में वह छात्रों को भाग लेने से रोकते हैं।
2. सम्प्रेषण में सामाजिक कुशलता का सर्पशा अभाव रहता है।
3. छात्रों के साथ कार्य करने में रूचि नहीं लेता है।
4. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में छात्रों का महत्व नहीं देते हैं।

अप्रत्यक्ष शिक्षक व्यवहार

ऐसे शिक्षण-व्यवहार में शिक्षक विद्यार्थियों को कक्षा-कार्य में भाग लेने की स्वतंत्रता देते हैं। उनकी व्यापक भागीदारी की व्यवस्था करते हैं उनके विचारों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं।

वर्त्तमान सामाजिक व्यवस्था एकल व्यक्ति निवास व्यवस्था बनती जा रही है। खासकर इस शोध क्षेत्र के विद्यार्थी ग्रामीण इलाके से आकर शहरी व्यवस्था में एक कमरे के मकान में या हॉस्टल के दरबेनु में एक कमरे में रह रहे होते हैं।

अत: उनकी प्रवृति स्वकेन्द्रित हो जाती है और खुद को साबित करने की होड़ में वह शामिण होते हैं।

जबकि शिक्षकों के लिए अप्रत्यक्ष शिक्षण-व्यवहार श्रेष्ठ माना जाता है।

न्यासयोग ऊर्जा उपचार, चिकित्सा के माध्यम से इस शोध में स्वकेन्द्रित छात्राध्यापकों पर प्रयोग कर उन्हें छात्र-केन्द्रित व्यवहार की लिए प्रेरित किया हैं।

खासकर अभी करोना काल में शिक्षा का स्वरूप भी बदलकर स्वकेन्द्रित प्रकार का हो गया है। तनावपूर्ण हो गया है। बच्चे घर से पढाई करते हूए कई तरह के समस्या से जुझ रहे हैं। मोबाइल एडिक्शन की समस्या बढ़ी है।

शोध-कार्य

यह शोध कार्य ए०एन० कॉलेज, पटना के बी०एड० विभाग के छात्राध्यापकों के साथ किया गया है। दो स्तर पर यह शोध हुआ है, जिसमें 25 छात्राध्यापकों को चयनित किया गया। पहले स्तर पर इन छात्राध्यापकों को न्यासयोग ऊर्जा आचार प्रशिक्षण से पूर्ण कक्षा-व्यवहार पर अध्ययन किया गया।

उनके पांच व्यवहार का प्ररिक्षण किया गया।

1. कटुता के शब्द
2. आलोचना
3. हंसी उड़ाने की प्रवृति
4. स्वकेन्द्रित प्रवृति
5. भेदभाव की प्रवृति

15 दिनों तक कक्षा-प्रशिक्षण के बाद छात्रों से इनके व्यवहार की प्रश्नावली पर साक्षात्कार द्वारा परिणाम प्राप्त किया गया।

परिणाम

क्रम सं०	व्यवहार	शिक्षक-व्यवहार (प्रतिशत)
1	कटुता के शब्द	60%
2	आलोचना	80%
3	हंसी उड़ाने की प्रकृति	50%
4	स्वकेन्द्रित प्रवृति	75%
5	भेदभाव की प्रवृति	20%

इस अध्ययन बाद इन 25 छात्राध्यापकों को न्यासयोग उर्जा उपचार का एक महीने का प्रशिक्षण दिया गया है। न्यासयोग ऊर्जा उपचार मूलत: व्यवहार का प्रशिक्षण है। इस प्रशिक्षण कों जीवन जीने की कला-दस वाक्य, आज के दिन अभ्यास के माध्यम से व्यवहार को सह्रदय, प्रेममय, क्षमाशील, मानवता से पूर्ण बनाया जाता है।

यह दस वाक्य हैं

1. आज के दिन मैं कटु शब्द नहीं बोलूँगा/नहीं बोलूँगी।
2. आज के दिन मैं किसी को प्रति आक्रोश नहीं करूँगा/नहीं करूँगी।
3. (3)आज के दिन मैं किसी की हंसी नहीं उड़ाऊँगा/नहीं उड़ाऊँगी।
4. आज के दिन मैं किसी की आलोचना नहीं करूँगा/नहीं करूँगी।
5. आज के दिन मैं अपने काम के प्रति ईमानदार रहूँगा/रहूँगी।
6. आज के दिन मैं सभी के प्रति आभार प्रार करूँगा/करुँगी।
7. आज के दिन मैं सभी को क्षमा करूँगा/करुँगी।
8. आज के दिन मैं सभी के प्रति दिव्य प्रेम भाव प्रगट करूँगा/करूँगी।

9. आज के दिन मैं अपने व्यवहारिक आय का सकारात्मक आदान-प्रदान करूँगा/करूँगी।
10. इन अभ्यासों को जीवन में उतारने का प्रयास करूँगा/करुँगी।

न्यासयोग सिद्धांत के अनुसार आपके व्यवहार से आपका आभामंडल बनता है और यह उर्जात्मक आभामंडल आपको सामाजिक और असामाजिक कार्य के लिए प्रेरित करता है। नकारात्मक आभामंडल नकारात्मक या असामाजिक व्यवहार के लिए उद्वेलित करता है। शिक्षण व्यवहार में यह प्रत्यक्ष शिक्षण-व्यवहार है।

सकारात्मक ऊर्जा से निर्मित-आभामंडल सकारात्मक व्यवहार के लिए प्रेरित करता है। शिक्षण व्यवहार में यह अप्रत्यक्ष शिक्षण व्यवहार है।

शोध प्रक्रिया में 25 छात्राध्यापकों को इस दस वाक्य के अभ्यास के साथ कक्षा-प्रशिक्षण में भेजा गया।

15 दिनों के बाद पुनः कक्षा के छात्रों द्वारा इन छात्राध्यापकों के व्यवहार संबंनी जानकारी ली गई तो छात्रों ने बिल्कुल विपरीत बातें बताई।

अब इन छात्राध्यापकों से छात्रों की दोस्ती हो चुकी थी। छात्र अपने प्रश्न समझ रहे थे। छात्रों की भागीदारी कक्षा-कार्य में बढ़ी थी।

तालिका 1: पूर्व में छात्र-भागीदारी (कक्षा-कार्य में)

क्रम सं०			
1	शिक्षक-कथन	क्रिया	छात्र भागीदारी
	पाठ्य-विनिमय	कहानी-पाठ	शून्य
2	विज्ञान-पाठन	वैज्ञानिक शब्दावली-व्याख्या	5%
3	अन्य गतिविधि	प्रतियोगिता आयोजन	10%

तालिका 2: न्यासयोग प्रशिक्षण पश्चात कक्षा-कार्य में छात्र-भागीदारी

क्रम सं०	शिक्षक कथन	क्रिया	छात्र-भागीदारी
1	पाठ्य-विनिमय	कहानी-पाठ	70%
2	विज्ञान पाठन	वैज्ञानिक शब्दावली	40%
3	अन्य गतिविधि	प्रतियोगिता आयोजन	80%

निष्कर्ष

वर्तमान की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का छात्राध्यापक प्रायः प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में संलग्न होते हैं। घर से बाहर अकेले या मित्रों के साथ रहकर उनकी जीवन-शैली साकेन्द्रित हो जाती हूँ। वह बी०एड० पाठ्यक्रम को भी एक रोजगार परक पाठयक्रम के रूप में देखते हैं। कक्षा-प्रशिक्षण को पाठ्यक्रम की अनिवार्यका के रूप में लेते हैं। यही कारण है कि उनका व्यवहार प्रत्यक्ष शैक्षणिक-व्यवहार के अनुरूप हो जाता है।

शोध में सम्मलित छात्राध्यापकों में भी यह प्रवृति थी। न्यासयोग ऊर्जा अभ्यान प्रशिक्षण के बाद उनके के जीवन शैली और व्यवहार में व्यापक परिवर्तन आया।

उन्होंने संयमित रूप से आगे की कक्षा-कार्य को संचालित किया और कक्षा के छात्रों की भागीदारी कक्षा-कार्य में बढ़ाई।

नई शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा पर बहुत बल दिया गया है। बी०एड० पाठ्यक्रम में EPC-1 से EPC-4 तक व्यक्तित्व निर्माण का ही प्रशिक्षण है।

न्याययोग पाठ्यक्रम को EPC-4 के साथ समायोजित कर इस बी०एड० पाठ्यक्रम को और ज्यादा मूल्यपरक बनाया जा सकता है।

संदर्भ

1. महन्त जे., अध्यापक शिक्षा, दीप एंड दीप ISBN: 8176294640
2. हुडा रामनिवास, मानव अधिकार शिक्षा, के०एस० के० पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीव्यूट, नई दिल्ली।
3. मदान पुनम/पांडेय रामशकल (2019/2020) समसामयिक भारत एवं शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. नारायण कपिलदेव (2007), महानिर्वाणतन्त्रम चौखम्या प्रकाशन, वाराणसी
5. महामहोपाध्याय डॉ. श्री गोपीनाथ कविराज (2009), तांत्रिक साधना और सिद्धांत, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, शोभा प्रिंटिंग प्रेस, पटना।
6. यादव के.के. सुखिया एस०पी० (2012/2013) विद्यालय प्रशासन, संगठन, पर्यवेक्षण तथा प्रबंधन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आर्यन प्रिंटर्स, आगरा
7. प्रभात पी. राज/कुमारी प्रतिभा (2020) ज्ञान एवं पाठ्यचर्या, ठाकुर पब्लिकेशन प्रा० लि०, पटना।
8. शर्मा डॉ. आर. ए. (2009), आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
9. माथुर के.पी. (2013/14), अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
10. शर्मा डॉ. खेमराज, शर्मा डॉ. ब्रजराज (2012) अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
11. Banga Chaman Lal (2014), शिक्षक, शिक्षक व्यवहार एवं शिक्षक एक व्यवसाय, International Multidisciplinary e- Journal, Vol – III Issue-IV April-2014, ISSN-2277-4262.
12. singha Dheerendra kumar, शिक्षकों का शिक्षाण-व्यवहार, 2018, IJSRST, volum-3 Issue-1, print ISSN 2395-6011 online ISSN-2395-6027